**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना**

**मो०न०9546743796**

**Email-** **mishrasm966@gmail.com**

**B. A.III**

 **व्यंजना शब्द – शक्ति**

 **‘ व्यंजना ‘ क अर्थ अछि विशेष प्रकारक आँजना | आँजन कें लगौला सँ आँखिक ज्योति बढ़ि जाइत अछि | मुदा जखन विशेष प्रकारक आँजन लगाओल जाएत त दिव्य ज्ञान भए सकैत अछि | व्यंजना – शक्ति शब्द मे नुकाएल वा रहस्यमय अर्थ कें प्रकट वा द्योतित करबाक शक्ति रहैत अछि आ ओ अर्थ तखनहि प्रकट होइत अछि जखन अभिधा आ लक्षणा शब्द – शक्ति व्यर्थ भए जाइछ | व्यंजना – शक्तिक काज अछि अभिधा एवं लक्षणा द्वारा अप्रकाशित अर्थ कें प्रकट करब वा प्रकाशित करब | जखन अभिधा शक्ति शब्दक अर्थ कें बताबए मे असमर्थ भए जाइत तखन लक्षणाक द्वारा अर्थ निकलैत अछि | मुदा किछु एहनो अर्थ होइत अछि , जकर ज्ञान अभिधा आ लक्षणा द्वारा नहि होइछ तखन एहन स्थिति मे एक तेसर शक्तिक कल्पना करए पड़ैत अछि आ ओ शक्ति व्यंजना टा अछि | एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे अभिधा आ लक्षणा शक्ति सभ मात्र शब्दहिक शक्ति सभ अछि वा व्यापार अछि , नुदा व्यंजना शब्द आ अर्थ दुनू मे लगैत अछि |**

 **एहि व्यंजना शब्द शक्ति कें स्पष्ट करबाक हेतु अनेक आचार्य लोकनि अपन – अपन ढंगसँ व्यंजनाक परिभाषा देलनि अछि | आचार्य पंडितराज जगन्नाथक कथन छनि –**

 **“ विरतास्वाभिधाद्यासु यथार्थे बोध्यते पर: |**

 **सा वृत्ति व्यंजना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च || “**

 **जखन अभिधा शक्ति अर्थ बनाबएमे असमर्थ भए जाइत अछि तखन लक्षणाक द्वारा अर्थ बतएबाक चेष्टा कएल जाइत अछि , मुदा किछु एहनो अर्थ अर्थ होइत अछि जकर प्रतीति अभिधा लक्षणा द्वारा नहि होइछ | एहना स्थितिमे एक तेसर शक्तिक आवश्यकता प्रतीति होइत अछि | अभिधा एवं लक्षणा शक्ति सभ अपन – अपन काज कएकें शान्त भए जाइत अछि तखन जाहि शक्तिक द्वारा अर्थक ज्ञान होइत अछि , ओकरा व्यंजना शब्द – शक्ति कहल जाइत अछि |**

 **हेमचन्द्रक कथन छनि - “ अभिधा शक्तिक द्वारा प्रतीत अर्थ सहृदय श्रोताक प्रतिभाक सहायता सँ एक नव अर्थकें द्योतित करैत अछि | एहि नवीं अर्थकें द्योतित करएवला शक्ति व्यंजना अछि | “**

 **एहि रूपसँ हम देखैत छी जे महिम भट्ट , मम्मट , नागेश भट्ट एवं अप्पय दीक्षित लोकनि सेहो उपर्युक्त परिभाषा कें किछु शाब्दिक परिवर्तन कए स्वीकार कएलनि अछि | एहना स्थितिमे कहल जा सकैत अछि जे जखन अभिधा आ लक्षणा अपन –अपन अर्थक बोध कराए के शांत भए जाइछ तखन जाहि शक्तिसँ व्यंग्यार्थक बोध हो , ओकरा व्यंजना शब्द – शक्ति कहल जाइत अछि |**

 **एतावता ज्ञात होइत अछि जे व्यंजना शब्द आ अर्थ व्यापार अछि | कखनहूँ व्यंजना विशेष शब्दक प्रयोगमे अंतर्निहित रहैछ त कखनहूँ सामान्य शब्दसँ व्यक्त होमएवला विशेष प्रकारक अर्थमे | एहि आधार पर व्यंजनाक दू मुख्य भेद कएल गेल अछि :- क. शाब्दी व्यंजना ख. आर्थी व्यंजना |**

 **( क ) शाब्दी व्यंजना : - जखन काव्य व्यंग्यार्थ वा ध्वन्यार्थ कोनो विशिष्ट शब्दक प्रयोग पर अवलंबित रहैत अछि , तखन शाब्दी व्यंजना होइत अछि | कवि द्वारा ओहि विशिष्ट प्रयुक्त शब्दक स्थान पर ओकर समानार्थक शब्द वा पर्यायवाची शब्द कखनहूँ नहि राखल जा सकैत अछि | ज ओहि विशिष्ट शब्दक बदला मे कोनो समानार्थक शब्द राखि देल जाएत त व्यंग्यार्थक प्रतीति आयुक्त संगत भए जाएत , यथा –**

 **“ नीचा जल छल उपर पानि**

 **एक तरल छल एक , सघन**

 **एके तत्वक छल प्रधानता**

 **कहू ओकरा जर वा चेतन | “**

**एहि पद्यमे ‘ प्रधानता ‘ शब्द एहन अछि , जकरा स्थान पर समानार्थी वा पर्यायवाची शब्दक प्रयोग परिवर्तन संभव नहि अछि , किएक त एहि पर सम्पूर्ण व्यंग्यार्थ वा ध्वन्यार्थ पूर्णरूपेण आश्रित अछि | वएह पवन , उल्का रुपमे आगि आ गिरिराजक रुपमे पृथ्वी सँ तीनू तत्व सभक विद्यमानता रहलहुं पर जलक बहुलता एवं सर्वव्यापकता कें अभिव्यंजित करैत अछि | एतए शब्दक महत्व भेलाक कारण शाब्दी व्यंजना भेल | ( क्रमशः )**